शोध–प्रारूप

पंचपरगनिया भाषा साहित्य का झारखण्ड के जनमानस पर प्रभावः एक अध्ययन

पीएच० डी० उपाधि हेतु प्रस्तावित शोध–प्रारूप की रूपरेखा

संकायः– जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा

स्नातकोत्तर पंचपरगनिया विभाग

राँची विश्वविद्यालय, राँची

वर्ष :– 2025

शोध निर्देशक

डॉ. जुरन सिंह मानकी

सहायक प्राध्यापक मुण्डारी विभाग

एस. एस. मेमोरियल कॉलेज

राँची विश्वविद्यालय, राँची

शोधकर्ता

मुकेश कुम्हार

यू. जी. सी. नेट

स्नातकोत्तर पंचपरगनिया विभाग

राँची विश्वविद्यालय, राँची

भूमिका

झारखण्ड राज्य प्रकृति की गोद में बसा हुआ एक बहुभाषी क्षेत्र है यहाँ के जल–जंगल एवं जमीन की पहचान ही अलग है। यहाँ की भाषा बहुत ही समृद्ध है एवं माटी की एक ऐसी खुशबू है। जिनका आनंद उठाने में कोई भी व्योक्ति हिचकिचाता नहीं है। झारखण्ड राज्य में विभिन्न प्रकार के जाति धर्म एवं समुदाय के लोग आपस में प्रेम पूर्वक मिलजुल कर रहते है और अपनी परंपरा– संस्कृति को बचाये रखे हुए हैं। यहाँ विविधता में एकता झारखण्ड की विशेषता है, इस राज्य की कोख में अनेक भाषाएँ एवं संस्कृतियाँ सिमटी हुई हैं। यहाँ की प्राकृतिक सौंदर्य राज्य के निवासियों का गौरव को बढ़ाता है, और यहाँ के लोगो को एक अलग ही पहचान दिलाता है।यह राज्य जनजाति बाहुल्य प्रदेश के रूप में जाना जाता है। परन्तु जनजाति और गैर जनजातीय (सदान) लोगों के रंग–रूप, वेश–भूषा, रहन–सहन में समानता है। इनके समाजिक, सांस्कृतिक एवं भाषायी क्रिया–कलाप इन्हे एक सूत्र में पिरोए नजर आति है। झारखण्ड राज्य की जनजातीय भाषओं एवं क्षेत्रीय भाषाओं के बीच अन्योन्य संबंध है। सभी एक दुसरे के पुरक हैं, यहाँ की निवासियों की घनिष्टता एवं मधुरता बड़ी ही अनुकरणीय हैं। यहाँ की संस्कृति की आत्मा गीत, संगीत, नृत्य,कविता कहानी, लोकोक्तियाँ आदि में है। इसमें भाषा एवं संस्कृति की महक सभी अंगो में प्रदर्शित होती है। यह एक बहु प्रजातिय एवं बहुभाषिक राज्य के रूप में विख्यात है। यहाँ विभिन प्रजाति के लाग निवास करती है। यहाँ एक साथ तीन भाषा परिवारों की भाषा बोली जाती है। आस्ट्रोएशियाटिक भाषा परिवार, द्रविड़ भाषा परिवार एवं आर्य भाषा परिवार के निवास करते हैं। संथाल, मुण्डारी, हो तथा खड़िया भाषाएँ आस्ट्रिक भाषा परिवार के अंतगर्त आती है। वहीं कुडुख, माल्टो, भाषाएँ द्रविड़ परिवार के अंतगर्त आति है, तथा नागपुरी, खोरठा, कुड़माली तथा पंचपरगनिया भाषाएँ आर्य परिवार से संबंधित है। आर्य भाषा परिवार में पंचपरगनिया भाषा का विशिष्ट स्थान रहा है। यह झारखण्ड में बाली जाने वाली भाषाओं में एक प्रमुख भाषा है पंचपरगनिया भाषा बहुजातीय संपर्क भाषा होने के साथ–साथ इनके साहित्य पद्य। और गद्य दोनों विधाओं में मौजूद है, जो संम्पूर्ण भाषा क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करती है। पंचपरगनिया भाषा साहित्य में पद्य साहित्य का विकास जहाँ पहले हुआ वहीं गद्य साहित्य का विकास आधुनिक साहित्य काल क्रम में हुआ है। पंचपरगनिया आदिकालीन मौखिक का प्रचारित रूप होने के बाद अब

पंचपरगनिया भक्ति काल का प्रतिनिधित्व करती है। वर्तमान में बंगला, ओडिया, कुड़माली साहित्य की तरह पंचपरगनिया भाषा में भी महाकाव्य,खण्ड काव्य, स्फुट काव्य एवं आधुनिक काव्य की विधाएँ रची गई है और यह प्रक्रिया गतिमान है। इसी तरह पंचपरगनिया उपन्यास, कहानी, निबंध, एकांकी आदि लिखे गए हैं एवं वर्तमान में यह कार्य जारी है। पंचपरगनिया साहित्य का झाारखण्ड में वही प्रभाव है, जो प्रभाव हिन्दी साहित्य का पुरे भारतवर्ष में हैं। झारखण्डी भूभाग में अनेक भाषाएँ बोली जाति हैं, परंतु पंचपरगनिया झारखण्ड राज्य में संपर्क भाषा के रूप में एक विशेष स्थान रखता है। यहाँ आदिवासी हों या गैर–आदिवासी (सदान) सभी समुदाय अपनी बोलचाल में पंचपरगनिया भाषा का ही प्रयोग करते हैं। पंचपरगनिया भाषा अपनी मधुरता, सादगी एवं कोमलता से झारखण्ड के जनमानस को प्रभावित करता आया है। पंचपरगनिया भाषा की उत्पति के विषय में सर जार्ज ग्रियर्सन, पं. रामचंद्र शुक्ल, राय बहादुर, श्याम सुंदर दास आदि भारतीय आर्य भाषा के विद्वान आर्य भाषा को दो समुहों में रखते हैं। एक अंतरंग भाषा का समुदाय और दुसरा बहिरंग भाषा का समुदाय। पहले समुदाय की प्रतिनिधि भाषा को हम खड़ी बोली अथवा आधुनिक हिन्दी भाषा को ले सकते हैं, जिसका उदभव शौरसेनी प्राकृत से हुआ है। दुसरे समुदाय भाषा को हम बंगला मान सकते हैं जो मागधी प्राकृत से उत्पन्न हुई है। पंचपरगनिया भाषा का विकास इन्ही भाषाओं के साथ–साथ प्रतित होता है। यह ठीक– ठीक नहीं कहा जा सकता है कि पंचपरगनिया भाषा ने कब अपने आधुनिक रूप को प्राप्त किया, फिर भी इस संबंध में कई आधार दिए जा सकते हैं। कहीं अपभ्रंश का काल सन् 600 ई. तक माना गया है। कोई विद्वान ने इसे सन् 600 ई. से 1200 ई. तक का समय माना है। प्राकृत और अपभ्रंश जो लोकप्रिय बोलियाँ थी, गुर्जरी और आभीरों से बहुत प्रभावित हुई है। एक महत्वपूर्ण प्राकृत गुर्जरी जिससे आधुनिक गुजराती भाषा का जन्म हुआ यह गुर्जरों की देन है। छठीं सदी के महान भाषाविद् और सौंदर्य शास्त्री दण्डी ने प्राकृत को आभीरों की भाषा के प्रभाव से उत्पन्न पद्य शैली के रूप में परिभाषित किया है। भंडारकर का विचार है कि भारत में ईसा मसीह की कथाएँ आभीरों नें ही फैलाई और उसका समावेस कृष्ण–गाथाओं में भी कर दिया गया। पंचपरगनिया भाषा साहित्य का झारखण्ड के जनमानस पर प्रभाव : एक अध्ययन पर प्रकाश डालें तो पंचपरगनिया लोक साहित्य और शिष्ट साहित्य दोनों का अपना अलग स्थान है। हमलोगों ने अपने बचपन में जितने भी

लोक कथाएँ और गीत आदि अपने दादी, नानी से सुने हैं, उनका हमारे जीवन में व्यापक प्रभाव पड़ा है। इन सभी लोक कथाओं एवं लोकगीतों के माध्यम से लोग तत्कालिक परिस्थितियों एवं तथ्यों को मौखिक शब्दों में बांधने का प्रयास किए हैं।

शोध की प्रेरणा

झारखण्ड राज्य(छोटानागपुर) मेरा जन्म भूमि एवं कर्म भूमि रहा है और मैं इस क्षेत्र में जन्म लिया हूँ, इसी मिट्टी में पला बढ़ा हूँ जिसके कारण मुझे पंचपरगनिया भाषा को करीब से समझने का मौका मिला है एवं मेरा मातृभाषा भी पंचपरगनिया है तो भला अपनी मातृभाषा से किससे प्रेम नहीं हो सकता ? मुझे अपनी मातृभाषा पर पढ़ाई करने का शोक बचपन से था, किन्तु पंचपरगनिया भाषा को विषय सामग्री में रखने का सुअवसर प्राप्त नहीं हुआ। मेरा मन एक ही प्रश्न खड़ा होता था कि मुझे अपने माटी के कुछ करना चाहिए फिर मैनें पंचपरगनिया भाषा में स्नात्कोत्तर की पढ़ाई करते समय ही मेरे मन में पंचपरगनिया भाषा साहित्य का झारखण्ड के जनमानस पर प्रभाव देखने को मिल रहा है इसलिए इस विषय पर शोध करने का मन बना लिया था जब मैने यू. जी. सी. द्वारा आयोजित नेट की परीक्षा पास करने के बाद मैं अपना शोध विषय पंचपरगनिया भाषा साहित्य,का झारखण्ड के जनमानस पर प्रभाव : एक अध्ययन चुना। इस विषय पर मैंने अपने गुरूजनों एवं सहपाठियों से विचार विमर्श किया तो उन्होंने मुझे सहर्ष आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया तथा यह भी कहा इस क्षेत्र में अभी तक इस पर शोध कार्य नहीं हुई है।

अतः यथाशीघ्र इसमें कार्य होनी चाहिए, फिर क्या थी ? मैंने तुरंत उसे अपने शोध का विषय बनाया और मेरे गुरूजनों एवं सहपाठियों से मुझे इस विषय के लिए यथासंभव सहायता करने की बात कहकर मेरी प्रेरणा में ताकत और जोश भर दिया।

शोध का उद्देश्य :

इस शोध का उद्देश्य निम्नलिखित है :–

1. पंचपरगनिया साहित्य का झारखण्ड राज्य के जनजानस पर समाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक एवं राजनीतिक प्रभाव को प्रस्तुत करना।

2. झारखण्ड राज्य में पंचपरगनिया भाषी जन समुदाय का पहचान करना।

3. झारखण्ड के लोगों को प्रभावित करने वाले पंचपरगनिया साहित्य एवं साहित्यकारों को बतलाना।

4. झारखण्ड की जनजातीय भाषाओं एवं क्षेत्रिय भाषाओं में पंचपरगनिया के प्रभाव को बतलाना।

5. पंचपरगनिया साहित्य का वर्तमान समय में प्रभाव को। बतलाना।

6. झारखण्ड के बाहर निवास करने वाले लोगों में पंचपरगनिया भाषा का प्रभाव को बतलाना।

परिकल्पना :

परिकल्पना प्रत्येक अनुसंधान का भाषा ही होनी है। वैज्ञानिक अध्ययन परिकल्पना ही होती है।

जब मैं पंचपरगनिया भाषा साहित्य का झारखण्ड के जनमानस पर गहन अध्ययन किया तो मुझे कुछ नया अनुभव हुआ, जो अन्य विधाओं से विल्कुल अलग और प्रासांगिक लगा जो समाज के लिए काफी उपयोगी और महत्वपूर्ण है, जो नित दिन मनुष्य के व्यवहारिक विचारों को आदान प्रदान में काफी महत्वपूर्ण है। इसके माध्यम से अनुभव अपने शब्दों को लचीले ढंग से प्रस्तुत करता है। इसी वजह से मुझे इस

विषय की ओर लगाव बढ़ा और मुझे लगा कि इस विषय पर कार्य किया जा सकता है और मैं इस विषय पर अपना शोध कार्य करने के लिए प्रेरित हुआ

शोध का महत्व :– इस शोध प्रबंध का महत्व व्यापक है, पंचपरगनिया में साहित्यिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन का महत्व कई दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है।

- इसमें पांच परगना के लोगों की जीने की कला, संस्कृति की महानता आदि का आकलन हो सकेगा।
- यह शोध साहित्यक, सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक क्षेत्र के लिए भी लाभकारी सिद्ध होगा।
- इस शोध प्रबंध के माध्यम से समस्त पंचपरगनिया भाषा–भाषियों एवं समाज के कवियों को लाभ मिलेगा।
- साहित्कारों एवं कलाकारों के कृत्यों से संबंधित तथ्यों की प्रस्तति होगी।
- इस शोध से पंचपरगनिया संस्कृति के आदर्शों का समुचित ढंग से प्रकाशन होगा।
- इससे पंचपरगनिया कथा को अच्छी तरह जानने में मद्द मिलेगी।
- पूर्व शोध कार्य का विवरण एवं पंचपरगनिया शिष्ट साहित्य पर शोध कार्य किया गया है। जिसमें पंचपरगनिया भाषा साहित्य में पाई जाने वाली विभिन्न प्रकार की शिष्ट साहित्य, निबंध, उपन्यास, नाटक, कविता, गीत आदि पर चर्चा हुई है। लेकिन इसमें विशेष रूप से कथा साहित्य का अलग से विश्लेषण आवश्यकता अनुरूप नहीं हुआ है।

शोध विधि :

निम्नलिखित विधियों के द्वारा शोध कार्य किए जा सकते हैं –

1. विश्लेषणात्मक विधि।

2. साक्षात्कार विधि।

3. अवलोकन विधि।

4. वर्णात्मक विधि।

5. आलोचनात्मक विधि।

शोध का क्षेत्र :— समस्त पंचपरगनिया भाषी क्षेत्रों जहां इसके बोलने वालों की बहुलता पायी जाती है, वहीं इसके अतिरिक्त वैसे क्षेत्र जहां पंचपरगनिया भाषा संस्कृति के लोग जाकर बस गए हैं। इस अनुसंधान क्षेत्र में विशेष कर राँची जिला के अलावे सरायकेला—खरसावां, खूंटी, पुर्वी सिंहभूम, प. सिंहभूम, बोकारो, धनबाद जिला है।

शोध सहायक उपकरण :—

प्रस्तुत योजना में निम्नलिखित उपकरणों की आवश्यकता होगी—

1. टेप रिकॉडर
2. केमरा
3. मोबाइल
4. लैपटॉप
5. इंटरनेट

शोध कार्य से समाज पर प्रभाव

मेरा शोध का विषय ' पंचपरगनिया भाषा साहित्य का झारखण्ड के जनमानस पर प्रभाव : एक अध्ययन' में पंचपरगनिया भाषा साहित्यकारों का साहित्य में योगदान कोई नई बात नहीं है। यह तो आदिकाल से ही लोगों के एक कंठ से दुसरे कंठों में हस्तानांतरित होते हुए धीरे–धीरे इसका लिपिबद्ध हुआ एवं आज एक विशाल रूप ले चुका है। जिनमें विभिन्न साहित्यकारों के व्यावहारिक निराकरण के लिए नई सोंच प्रस्तुत कर हम इन साहित्यक रचनाओं एवं व्यावहारिक निराकरण के लिए नई दिशा, नई सोंच प्रस्तुत कर सकते हैं। जो कि आधुनिक समय में साहित्यकारों की क्रांति के प्रति संवेदनशील एवं सजग होंगे।

इस शोध से साहित्यकारों का साहित्यक योगदानों का समग्र रूप प्राप्त होगा जो पाठकों, शोधार्थियों एवं हमारे आने वाले पिढ़ी के लिए मील की पत्थर सावित होगी। पंचपरगनिया भाषा और साहित्य के विकास में झारखण्डी जनमानस के योगदान का अध्ययन भविष्य के अनुसंधानकर्ताओं के सामने एक नजर में पुरे पंचपरगनिया भाषा पर विस्तारित जानकारी प्राप्त हो सकती है। प्रस्तावित शोध कार्य के महत्व सिर्फ भाषा साहित्य के लिए ही नहीं अपितु सामाजिक क्ष़ेत्र, व्यावहारिक क्षेत्र एवं सामान्य प्रतियोगिता परीक्षा की दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण होगी।

अध्याय प्रारूप

पहला अध्याय :– पंचपरगनिया भाषा साहित्य का परिचय

(क) पद्य साहित्य

- गीत
- कविता
- प्रबंध काव्य

(ख) गद्य साहित्य

- कहानी
- उपन्यास
- नाटक
- एकांकी
- निबंध
- अन्य विधाएँ

दुसरा अध्याय :– झारखण्ड में पंचपरगनिया क्षेत्र के जनमानस की सामान्य विशेषताएँ

(क) जनजातिय समुदाय की विशेषताएँ

(ख) गैर जनजाति समुदाय की विशेषताएँ

तीसरा अध्यायः– पंचपरगनिया भाषा का झारखण्ड के जनमानस पर सांस्कृतिक प्रभाव

(क) पर्व–त्योहारों में

(ख) आखाड़ों में

(ग) जीवन के विविध क्रिया–कलापों में

चौथा अध्याय :– पंचपरगना क्षेत्र के क्रिया कलापों में पंचपरगनिया भाषा का प्रभाव

(क) धार्मिक अनुष्ठान में पंचपरगनिया का प्रभाव

(ख) धार्मिक विषय के गीत एवं कविताएँ

पाँचवा अध्याय :– पंचपरगनिया भाषा का झारखण्ड के जनमानस पर राजनीतिक प्रभाव

(क) राष्ट्रीय आंदोलन में

(ख) झारखण्ड आंदोलन में

छठा अध्याय :– झारखण्डी जनमानस पर पंचपरगनिया साहित्य का प्रभाव

(क) पद्य साहित्य का झारखण्डी जनमानस में प्रभाव

- गीत
- कविता
- लेख
- पत्र–पत्रिकाएँ

(ख) गद्य साहित्य का झारखण्डी जनमानस में प्रभाव

- कहानी
- उपन्यास
- नाटक
- एकांकी
- निबंध
- अन्य विधाएँ

सातवाँ अध्याय :– पंचपरगनिया साहित्य में स्थानीय जनमानस का प्रतिबिंब

(क) सामाजिक गतिविधियों से संबंधित

(ख) आर्थिक गतिविधियों से संबंधित

(ग) राजनीतिक गतिविधियों से संबंधित

(घ) शैक्षिक गतिविधियों से संबंधित

आठवाँ अध्याय :– झारखण्ड से प्रवासित लोगों में पंचपरगनिया भाषा का प्रभाव

(क) असम

(ख) ओड़िसा

(ग) प. बंगाल

(घ) अन्य

आधार ग्रंथ

1. केशरी डॉ० बिशेश्वर प्रसाद :– नागपुरी भाषा और साहित्य, कनाल प्रकाशन राँची 1971
2. केशरी डॉ० बिशेश्वर प्रसाद :– नागपुरी कवि और उनके काव्य, नागपुरी संस्थान पिठोरिया राँची 2014
3. अनुज डॉ० भुवनेश्वर :– नागपुरी लोक साहित्य, झाारखण्ड झरोखा रातु रोड, राँची 1992
4. उपाध्याय डॉ० कृष्णदेव :– लोक साहित्य की भूमिका, साहित्य भवन प्रा. लिमिटेड, 56 रानीमण्डी, प्रयागराज
5. उपाध्याय भगवत शरण :– भारतीय संस्कृति के स्त्रोत
6. अहोदार डॉ० कलावती :– नागपुरी लोकगीत साहित्यक एवं सांस्कृतिक अध्ययन, कलासिकल पब्लिशिंग कंपनी न्यू दिल्ली 2002
7. गुप्ता सुनिता कुमारी :– पंचपरगनिया लोक साहित्य, कलासिकल पब्लिशिंग कम्पनी न्यू दिल्ली 2009
8. गंझू डॉ० गिरिधारी राम :– नागपुरी के प्राचीन कवि, झारखण्ड झरोखा रातु रोड राँची 2012
9. गोस्वामी डॉ० श्रवण कुमार :– नागपुरी भाषा, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना
10. तिवारी डॉ० उदय नारायण :– भोजपुरी भाषा और साहित्य, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् पटना
11. शुक्ल आचार्य रामचंद्र :– हिन्दी साहित्य का इतिहास, विश्वभारती प्रकाशन, नागपुर
12. तिवारी डॉ० भोलानाथ :– भाषा विज्ञान, किताब महल एजेन्सीज, इलाहाबाद

सहायक ग्रंथ

1. अहीर डॉ० करम चन्द्र – व्योक्तित्व एवं कृतित्व– सबिता कुमारी मुंडा, 2013
2. सिंह डॉ० पराग किशोर – पंचपरगनिया मइध कालीन कवि आर उनखर रचना झारखण्ड झरोखा, रातु रोड, राँची, 2014
3. गौझू डॉ० गिरिधारी राम एवं मिश्र डॉ० शकुंतला – झारखण्ड की पारंपरिक कलाएँ, झारखण्ड झरोखा, रातु रोड, राँची, 2015
4. गौझू डॉ० गिरिधारी राम – झारखण्ड के लोक संगीत, झारखण्ड झरोखा, रातु रोड, राँची, 2015
5. सिंह डॉ० पराग किशोर – पांच परगनाक साहित्य और सांस्कृतिक चिन्हाप, झारखण्ड झरोखा, रातु रोड, राँची, 2014
6. डॉ० नगेन्द्र एवं हरदयाल – हिन्दी साहित्य का इतिहास, मयूर बुक्स 4226/1, अंसारी रोड दरीयागंज, नयी दिल्ली, 1973
7. स्वाँसी डॉ० अम्बिका – पंचपरगनिया लोकगीतों में जनजीवन, झारखण्ड झारोखा, राँची, 2013
8. महतो परमानन्द – पंचपरगनिया भाषा, कनक पब्लिकेशन राँची, 1990
9. अनुज डॉ० भुवनेश्वर – झारखण्ड के शहीद, झारखण्ड झरोखा, राँची, 2013
10. सिंह डॉ० पराग किशोर – आधुनिक पंचपरगनिया साहित्यकार आर कलाकार
11. रंजीत कुमार प्रमाणिक – पंचपरगनिया लोक गीतों में प्रकृति चित्रण
12. प्रभुदयाल सिंह मुंडा – पंचपरगनिया लोकगीतों का सांस्कृतक अध्ययन, 2013
13. आनंद राम महतो – छौ– नृत्य कलाकार पदम् श्री गंभीर सिंह मुंडा : जीवन एवं कला संसार, 2010
14. सिंह डॉ० पराग किशोर – पंचपरगनिया साहित्य और संस्कृति कि पहचान, 2014
15. सिंह डॉ० पराग किशोर – पंचपरगनिया लोक कथाओं का साहित्यिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन, 2010
16. पूर्ण चन्द्र सिंह मुंडा – पंचपरगनिया लोक साहित्य का सांस्कृतिक अध्ययन, 2010
17. अहीर डॉ० करम चन्द्र – 'आदर्श पंचपरगनिया बंदना गीत और कविता' पंचपरगनिया भाषा विकास समिति, बुंडू, 1999

पत्र–पत्रिका

1. बिहान पत्रिका – बुण्डू, राँची
2. सहिया –एम० जी० टावर 23 जेल रोड, राँची
3. डहर – छोटानागपुर संस्कृति संघ
4. आदिवासी – बिहार सरकार, राँची
5. संगम – आई० टी० पब्लिकेशन कोकर, राँची
6. हिन्दुसतान – कोकर, राँची
7. प्रभात खबर – कोकर, राँची
8. दैनिक जागरण – कोकर, राँची
9. आज – सामलोंग राँची
10. सन्मार्ग – हरमु रोड, राँची
11. दैनिक भास्कर – रातु रोड, राँची